SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

70

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022 Special Issue 05 Volume I (A)

हिंदी साहित्य : विमर्श के विविध आयाम

* अतिथि संपादक *

डॉ. अनंत केदारे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

डॉ. भाऊसाहेब नवले
उपप्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

लोकनेते डॉ.बाबासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सन्मानित)
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli**, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	समकालीन अस्मितामूलक विमर्श (आदिवासी विमर्श के विशेष संदर्भ में)	प्रा. डॉ. भरत शेणकर	05
2	21 वीं सदी की हिंदी कविता : आदिवासी संवेदना	डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	09
3	समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी विमर्श	डॉ. सुरेन्द्र शर्मा	12
4	हिंदी साहित्य में आदिवासी नारी विमर्श	प्रा. वडगे वृषाली रंगनाथ	15
5	दक्षिणी राजस्थान में आदिवासी जन आन्दोलन और महिलाएं: एक विमर्श	मदन लाल सुथार	18
6	उत्तराखंड का दलित विरोधी लुप्त लोकोत्सव : बेडवार्त	डॉ.संजीब सिंह नेगी	22
7	आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व: एक विमर्श	श्री.राजेंद्र वसंतराव जाधव डॉ. भाऊसाहेब नवले	27
8	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	सौ.मनिषा कल्याण तावरे	31
9	हिंदी कथा- साहित्य में दलित विमर्श	वैशाली काशिनाथ गायकवाड	33
10	'जब मैं स्त्री हूँ' में स्त्री विमर्श के नए स्वर'	डॉ. अनंत केदारे	36
11	'कोठा नं. 64' में वेश्या जीवन और संघर्ष	डॉ.पंडित बन्ने	42
12	दलित कविता में आस्मिता मूलक विमर्श	डॉ. मंगल कोंडिबा ससाणे	44
13	हिंदी नाटक और स्त्री विमर्श	डॉ. सौदागर सालुंके	48
14	जैनेंद्रकुमार की कहानियों में नारी विमर्श एवं समस्याएँ	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	50
15	'दुक्खम सुक्खम' उपन्यास में स्त्री समस्याओं का यथार्थ	पूनम वर्मा	54
16	गौरी देशपांडे के कहानियों में चित्रित पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित एवं अकेलेपन से पीड़ित स्त्री	प्रा. नामदेव ज्ञानदेव शितोळे	57
17	`बसंती' उपन्यास में स्त्री विमर्श	अनीता कुमारी	60
18	यशपाल के 'मनुष्य के रूप' उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. नारायण बागुल	66
19	मालती जोशी का कथा साहित्य : स्त्री विशेष के संदर्भ में	प्रा.सौ. रेशमा गणेश लोंढे	68
20	हिंदी साहित्य में मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में स्त्री संवेदनाएं	डॉ. चंदा सोनकर	70
21	नासिरा शर्मा के 'अजनबी जजीरा' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श	योजना रामकिशन नाकाडे डॉ. रमेश शिंदे	73
22	जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में नारी विमर्श ('करुणा' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	डॉ. संदिप दामू तपासे	75
23	महानगरीय कथा साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. पवार सीताबाई नामदेव	79
24	'गिरिराज किशोर के उपन्यास साहित्य में नारी विमर्श'	प्रा. नयना मोहन कडाळे	82
25	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	डॉ. रीतू भटनागर	84
26	उच्चशिक्षित महिलाओं की बदलती स्थितियाँ	डॉ. रिना रमेश सुरडकर	87
27	मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री जीवन: चिंतन और चुनौतियाँ	ईशा वर्मा	89
28	मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	प्रा. मीना ठाकूर	91
29	कंजर नारी की त्रासदी का वास्तविक लेखा-जोखा	मिनेश रामनाथ सातपुते डॉ.जितेंद्र पितांबर पाटील	93

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	समकालीन अस्मितामूलक विमर्श (आदिवासी विमर्श के विशेष संदर्भ में)	प्रा. डॉ. भरत शेणकर	05
2	21 वीं सदी की हिंदी कविता : आदिवासी संवेदना	डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	09
3	समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी विमर्श	डॉ. सुरेन्द्र शर्मा	12
4	हिंदी साहित्य में आदिवासी नारी विमर्श	प्रा. वडगे वृषाली रंगनाथ	15
5	दक्षिणी राजस्थान में आदिवासी जन आन्दोलन और महिलाएं: एक विमर्श	मदन लाल सुथार	18
6	उत्तराखंड का दलित विरोधी लुप्त लोकोत्सव : बेडवार्त	डॉ.संजीब सिंह नेगी	22
7	आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व: एक विमर्श	श्री.राजेंद्र वसंतराव जाधव डॉ. भाऊसाहेब नवले	27
8	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	सौ.मनिषा कल्याण तावरे	31
9	हिंदी कथा- साहित्य में दलित विमर्श	वैशाली काशिनाथ गायकवाड	33
10	'जब मैं स्त्री हूँ' में स्त्री विमर्श के नए स्वर'	डॉ. अनंत केदारे	36
11	'कोठा नं. 64' में वेश्या जीवन और संघर्ष	डॉ.पंडित बन्ने	42
12	दलित कविता में आस्मिता मूलक विमर्श	डॉ. मंगल कोंडिबा ससाणे	44
13	हिंदी नाटक और स्त्री विमर्श	डॉ. सौदागर सालुंके	48
14	जैनेंद्रकुमार की कहानियों में नारी विमर्श एवं समस्याएँ	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	50
15	'दुक्खम सुक्खम' उपन्यास में स्त्री समस्याओं का यथार्थ	पूनम वर्मा	54
16	गौरी देशपांडे के कहानियों में चित्रित पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित एवं अकेलेपन से पीड़ित स्त्री	प्रा. नामदेव ज्ञानदेव शितोळे	57
17	`बसंती` उपन्यास में स्त्री विमर्श	अनीता कुमारी	60
18	यशपाल के 'मनुष्य के रूप' उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. नारायण बागुल	66
19	मालती जोशी का कथा साहित्य : स्त्री विशेष के संदर्भ में	प्रा.सौ. रेशमा गणेश लोंढे	68
20	हिंदी साहित्य में मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में स्त्री संवेदनाएं	डॉ. चंदा सोनकर	70
21	नासिरा शर्मा के 'अजनबी जजीरा' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श	योजना रामकिशन नाकाडे डॉ. रमेश शिंदे	73
22	जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में नारी विमर्श ('करुणा' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	डॉ. संदिप दामू तपासे	75
23	महानगरीय कथा साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. पवार सीताबाई नामदेव	79
24	'गिरिराज किशोर के उपन्यास साहित्य में नारी विमर्श'	प्रा. नयना मोहन कडाळे	82
25	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	डॉ. रीतू भटनागर	84
26	उच्चशिक्षित महिलाओं की बदलती स्थितियाँ	डॉ. रिना रमेश सुरडकर	87
27	मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री जीवन: चिंतन और चुनौतियाँ	ईशा वर्मा	89
28	मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	प्रा. मीना ठाकूर	91
29	कंजर नारी की त्रासदी का वास्तविक लेखा-जोखा	मिनेश रामनाथ सातपुते डॉ.जितेंद्र पितांबर पाटील	93

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

28

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्री विमर्श के विविध आयाम

प्रा. मीना ठाकूर
हिंदी विभाग प्रमुख
श्री। शाहू मंदिर महाविद्यालय, पुणे

सर्वप्रथम आत्मकथा की शुरूवात तब से हुई जब से मनुष्य में अभिव्यक्ति की क्षमता पैदा हुई है । प्रायः ऐसा देखा गया है कि सदैव से ही आत्मकथाओं को प्रधानता मिली है। क्योंकि आत्म्कथा में मनुश्य को अपनी ही भावनाओं, अनुभवों को अपने ही चरित्र की अभिव्यक्ती और अनुभूति होती है। इसलिए आत्मकथा के प्रति सबका स्वाभाविक आकर्शण रहता है। आज के आधुनिक समाज मे व्याप्त संबंधो की कुत्रिमता, स्त्री संवेदना, बनावटी पन, औपचारिकता से मुक्ति के लिए संघर्ष , यांत्रिक जीवन से उपजी एकरसता आदि विषयों का चित्रण हिंदी आत्मकथाओं में दिखाई देता है। '' जीवन के इस परिवर्तन ने तत्कलिन उभरती लेखिकाओं का ध्यान आकृष्ठ किया है। वे नयी जिन्दगी के यथार्थ को उभारने के लिए नयी दिशा की खोज में निकल पडी। परिणाम स्वरूप सामाजिक मान्यताएं शनैः शनैः परिवर्तित होने लगी। जिसमें स्त्री लेखिकाओं में प्रमुखतः मन्नु भंडरी, उशा प्रियवदा, कृष्णा सोबती, दीप्ति खंडेलवाल, मृदुला गर्ग, निरूपमा सेवती, मेहरून्निसा परवेज, शिवानी, प्रभा खेतान, अलका सरावगी, मैत्रेयी पुष्पा आदि प्रमुख रूप से आती है। इन लेखिकाओं ने जीवन की हर परिस्थितीयों से जुझकर उन अनुभूत क्षणों को अपनी स्मृती में संजोकर बडी ही मार्मीकता से अपनी आत्मकथाओं में अभिव्यक्त किया है। परम्परा से चली आ रही नारी संबंधी ' प्रतिमा ' को नकारने का प्रयास किया है ''। [1]

हिंदी साहित्य में अनेक लेखक और लेखिकाओं की आत्मकथाएं लिखी गई। जिनमें प्रमुखतः सुधासिंह की मेरा जीवन (रास सुंदरी दासी) हरिवंशराय बच्चन की ' क्या भूलू क्या याद करू ', विष्णू प्रभाकर की ' एक दिशाहिन सफर ' , अमृता प्रीतम की ' रसौदी टिकट ' , प्रभा खेतान की ' अन्या से अन्यन्या ', नासिरा शर्मा की ' जहॉ फव्वारे लहु रोते है ' , तसलिमा नसरीन की आत्मकथा ' मेरे बचपन के दिन ' और मैत्रियी पुष्पा की आत्मकथा ' कस्तुरी कुंडल बसे ', ' गुडिया भीतर गुडिया ' जैसी अनेक आत्मकथाओं में स्त्री संवेदना एवं स्त्री विमर्श के विविध आयामों को स्पष्ट करने का प्रयास साहित्यिको ने किया है। '' मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्री संवेदना के विविध पहलुओं को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने निवेदन में लिखा है कि मैने खुद को पत्नी माना ही नहीं कभी क्योंकि मैं तो पति के रूप मे साथी - सखा ढूंढ रही थी, लेकिन मेरे पति तो मेरे मालिक बन बैठे है। में भी पुरूष की तरह मुक्त रूपसे जीना चाहती हूं ''।[2] मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में एक साथ दो अस्मिताएं प्रतिस्पर्धा करती नजर आती है। पहली अस्मिता है परम्परागत औरत की, दुसरी अस्मिता है आधुनिक औरत की। ये दोनो अपने ढंग से एक दुसरे से प्रतिस्पर्धा करती हैं और संसार को बदलती है। यहां स्त्री संवेदना और अस्मिताओं का संघर्ष दिखाई देता है। एक तरफ पुराने रूप, स्वरूप, मूल्य और आदते बनाएं रखने का दबाव और दुसरी ओर पुराने से मुक्त होने की छटपराहट दिखाई देती है।

'मैत्रेयी पुष्पा ' आधुनिक महिला लेखिकाओं में सफल रचनाकार है। बुंदेलखंड के जिला झॉसी के खिल्ली गॉव में रहनेवाली है। '' अपनी आत्मकथाओं में ' कस्तुरी कुंडले बसै ' और ' गुडिया भीतर गुडिया ' में अपने बाल्यकाल से लकर जवानी तक मन मस्तिश्क में रचे, बसे ग्रामीण जीवन और अपनी स्त्री संवेदना को सषक्त रूप से अभिव्यक्त कर स्त्रीयों को प्रेरित किया है। स्त्री के आंतरिक एवं बाहयजीवन की संवेदना के रूपों को पहचानने की और समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास अपनी रचनाओं में किया है '' 3 स्त्री संवेदना के सभी पहलुओं को अभिव्यक्त कर स्त्री विमर्श के उहापोह और स्त्री की विवषता एवं दासता को आम्तकथा में प्रस्तुत किया है। और साथ ही अधिकारों प्रति को जागृत किया है। हिंदी में जो गिनी - चुनी आत्मकथाएं है, उनमें एकाध को छोड दे तो ऐसी कोई नहीं है जिसकी तुलना मराठी या उर्दू आत्मकथाओं से भी की जा सके। ऐसा साहसिक तत्व ' कस्तुरी कुंडल बसै ' में पहली बार दिखाई देता है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी आपबीती आत्म्कथा ' कस्तुरी कुंडल बसै ' और ' गुडिया भीतर गुडिया ' इन दो आम्तकथा में स्पष्ट रूपसे अभिव्यक्त कीया है। मैत्रेयी और उनकी मॉ कस्तुरी की आत्मकथा स्पष्ट है। '' आपसी प्रेम, घृणा, लगाव और दुराव की अनुभूतियों से रची कथा में बहुत सी बाते ऐसी है, जो मैत्रेयी के जन्म के पहले ही घटित हो चुकी थी, मगर उन बातों को टूकडों - टूकडों में माताजी ने जब तब डाला, जब - जब उन्हे अपनी बेटी को स्त्री जीवन के बारे में नए सिरे से समझाना पडा। अपनी बाल्यावस्था की बहुत सी घटनाएं याद रही, बहुत सी ऐसी थी, जिनका छोर तो अपने पास था, मगर वे किसी दिशा की ओर नहीं ले

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

जाती थी ''। 4 कालान्तर में ऐसा भी हुआ कि सब कुछ अपनी आँखों के सामने घटित हुआ, लेकिन फिर भी क्रम टूटता था। जगह खाली रह जाती थी। वहाँ कल्पनाओं, अनुमानों से सूत्र जोडने पडे। माँ भी पूरी तरह स्पष्ट नहीं कहती थी। लेकिन उनकी बेटी, उनका लगाव, गुस्सा, लाड, अलगांव, ममता और निर्माह हो जाने की एक एक भंगिमा का बचपन में चित्र उतारता रही। हो सकता है, जो घटा हो, मगर यादों में जो मुकम्मल तस्वीरें जिन्दा है, वे ही कथा का आधार है, भले वे किसी और से सुनी हों, या अपने परिवार के बारे में किंवदान्तियां रही हो। उनके लिए तो सबकुछ माँ के निकट से जानने की ही पीडा और प्रक्रिया रही है और शायद इसलिए मैनें भी ठोस यथार्थ की तरह अपने तीखे - मीठे अनुभव लिखकर मुक्ति की आकांक्षा में माताजी रूपी संस्कार को अपने ' सिस्टम ' से निकाल रही थी या कि अपने बाहर भीतर को खंगालने पर तुली हुई इस कथा को लिख रही थी। मैत्रेयी के पिता हिरालाल थे जिनकी आर्थिक परिस्थिती दयनीय होने की वजह वह निरंतर संघर्ष करते रहे। मॉ कस्तुरी के पिता और भाई ने भी उन्हे आठ सौ कलदार में बेचा था। बचपन में ही मैत्रेयी ने अंग्रेजी राज में जमींदार के कोडे खाते मरते हुए अपने पिता की मौत देखी और फिर संघर्ष षुरू हुआ स्त्री संवेदना का। मैत्रेयी ने लिखा है कि मेरी मॉ बडी हिम्मतवाली स्त्री थी। उसके पुरोगामी विचारों के कारण मुझे प्रेरणा मिली। बचपन में स्कूल जाते समय मेरे साथ जो हादसा हुआ तब से मैंने हमेशा बडे साहस और विद्रोह के साथ संघर्ष शुरू किया। दरिद्रता ओर लाचारी ऐसे संघर्ष मय जीवन से टकराते मैत्रेयी पली बढी। उस समय स्त्रियां तो मनुष्यों की गिनती में थी ही नहीं। ' लडकी ' होना ही अपराध माना जाता है। स्त्री को पराया धन, बेटियों को पढाना फालतू का खर्च करना है। जन्म लिया है, जैसा भी है यही स्त्री का जीवन है। पुरूष सत्ताक समाज में औरत को हमेशा उपेक्षित किया जाता है। मैत्रेयी ने परिस्थिती के खिलाफ आवाज उठाकर समाज को जागृत करने का प्रयास किया है, क्योंकि अपने खुद के व्यक्तिगत जीवन में भी उन्होंने जद्दोजहद की है। ' गुडिया भीतर गुडिया ' में अपने अंतसंघर्ष को अभिव्यक्त कर एक स्त्री के अनेक परतीय व्यक्तित्व और एक लेखिका कि ऐसी ईमानदार आत्म - स्वीकृतियों है। आज भी स्त्रियाँ समाज, घर, पिता, पती, बेटे और भाइयों के दबाव में है कहीं भी समानता नहीं है। मैत्रेयी कहती है, '' कि आखिर अकेली स्त्री के ही समाज क्यों उम्मीद करता है, कि वही षुचिता का खयाल रखेगी ? आज भी पुरूष अनैतिक संबंध रखने के बावजूद खुले आम फिरता है क्यो ? ऐसी विसंगति क्यो ? जब कि स्त्री को पता है कि यह कितनी पवित्र है, और रहना चाहती है। उसकी परिभाषाएं पुरूष नहीं गढ सकते। पुरूष सर्वस्व के दायरे में स्त्री की देह ही होती है, जन्म से लेकर षादी तक उसी देह की रक्षा होती है, विवाह के बाद उसका उपभोग। देह से हटकर सोचे तो पता लगेगा की स्त्री क्या है ? 5

संक्षेप में मैत्रेयी कहती है कि स्त्री - पुरूष समानता होनी चाहिए। प्रत्येक स्त्री को प्रेरित करती है कि, ''स्त्री को समय के अनुसार परिस्थिति से लडना चाहिए। स्त्री अगर चाहती है तो उसमें जितनी दया, ममता, करूणा और सहनशक्ती है, उतनी ही अवसर आने पर विशम स्थितीयों से जुझने के लिए वह विद्रोही बन सकती है। '' इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा हिंदी साहित्य में स्त्री संवेदना एवं स्त्री विमर्श की प्रेरणा देनेवाली सर्वश्रेश्ठ आत्मकथा है। मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्री विमर्श के विविध आयाम स्पष्ट रूप से दिखाई देते है। स्त्री संवेदना, विद्रोही व्यक्तित्व, साहस और स्वाभिमानी स्त्री, आत्म्सम्मान और आत्मनिर्भरता से जीने और समझदारी से अपना कार्य करनेवाली स्त्री, ऐसे अनेक विमर्श के विविध आयाम को प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची: -

1) स्त्री होने की कथा, मैत्रेयी पुष्पा, 1995, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
2) कस्तुरी कुंडल बसै, मैत्रेयी पुष्पा, 1990, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
3) गुडिया भीतर गुडिया, मैत्रेयी पुष्पा, 1990, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
4) तथ्य और सत्य, मैत्रेयी पुष्पा, 1997, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
5) साहित्य का समाजषास्त्रीय अध्ययन, मैत्रेयी पुष्पा, 1995, किताबघर प्रकाशन , दिल्ली

□ □ □